ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No: UPBIL04292,
RNI REG.No.:UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No. 561/2013-14
Vol.-5, No.-I, PP-114-115, YEAR JUNE 2016

कला के रूप में भारतीय संस्थापन कला

❑ डॉ0 प्रमिला सिंह
❑❑ भानू प्रकाश कामले

समकालीन कला में संस्थापन कला एक नई विधा के रूप में उभरकर कला जगत के विद्वानों, समीक्षकों व कलाकारों के समक्ष प्रस्तुत हुई हैं। संस्थापन कला वह कला है जिसमें संसार के समस्त तत्वों का समावेश होता है चाहे वह सजीव अथवा निर्जीव हो। संस्थापन कला चित्रकला से भी प्राचीन मानी जाती है। इस कला की शुरूआत का इतिहास बहुत ही रोचक है। जब संसार में ऐतिहासिक परिर्वतन हो रहा था, राजाओं–महाराजाओं का राज सिंहासन छिन रहा था, लोकतान्त्रिक एवं प्रजातान्त्रिक राज्यों की स्थापना हो रही थी तब कवि, लेखकों, ने राजाओं की प्रशंसा के लेख लिखना छोडकर आम जनजीवन से सम्बन्धित लेखन प्रारभ्म किया।

इन सब परिवर्तनों के साथ साथ सृजनात्मक कला भी प्रारभ्म हुई। कलाकार भी परम्परागत चित्रण का विरोध कर रहे थे। ''कला के विकास में सन् 1863 ई0 का वर्ष परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण वर्ष है। इस वर्ष पेरिस में 'अस्वीकृत चित्रों की प्रदर्शनी' आयोजित हुई। हॉलाकि इस प्रदर्शनी के चित्रों की कटु आलोचना हुई। यह कलाकारों के स्वतन्त्र विचारों से कला निर्माण का प्रथम महत्वपूर्ण कदम था। सन् 1874 ई0 में तीस कलाकारों ने 165 कलाकृतियों की प्रदर्शनी आयोजित की। इस प्रदर्शनी में क्लोद मोने का चित्र 'सूर्योदय का प्रभाव' से प्रभाववाद का जन्म हुआ।1'' इसके पश्चात कई कला वाद प्रकाश में आये। दादावाद की प्रशंसा करनी होगी जिसमें कलाकारों ने निर्जीव तत्वों को उसी रूप में प्रदर्शित करके कलाकृतियों का नामकरण किया। यहाँ से संस्थापन कला के अंश की शुरूआत होती है। दादावाद जीवन, कला व दर्शन के प्रति अराजक विचारों का दृष्टिकोण था। प्रथम विश्वयुद्ध में मारे गये निर्दोष जनसमुदाय, दुःख–दर्द आदि के कटुता एवं निराशा के वातावरण में दादावाद का जन्म हुआ। दादावाद के कलाकारो ने अपने प्रदर्शनियों में पुराने बस टिकट, रस्सी के टुकड़े, पुरानी खराब घड़िया, लकड़ी के गुटके, पुराने चित्र, टूटे–फूटे सामग्री रखकर सृजनात्मक कला को जन्म दिया जो संस्थापन कला का ही एक स्वरूप था।

संस्थापन कला यथार्थ जीवन की वो सच्चाई है जिससे प्रत्येक मनुष्य प्रतिदिन गुजरता है। प्रतिदिन गुजरने वाले यथार्थ सच्चाई को जब कला के रूप में समावेशित करके अथवा व्यवस्थित करके कलादीर्घाओं, सार्वजनिक स्थानों पर प्रदर्शित की जाती है, तब यह संस्थापन कला को पूर्णरूपेण वर्णन करती है। संस्थापन कला को परिभाषित करते हुये रेखा श्रीवास्तव जी ने अपने लेख में लिखा है कि–''संस्थापन कला प्रदर्शनी स्थल को तीन आयामी कलाकृति के रूप में अभिव्यक्ति को कहते हैं। इस शैली में वास्तु से सम्बन्धित दिलचस्प एवं रोजमर्रा कीवस्तुओं को एक स्थान पर संयोजित करके प्रदर्शित किया जाता है। कभी–कभी दर्शक भी इस कलाकृति का हिस्सा बन जाता है।2'' आधुनिक में वैचारिक क्रान्ति आरम्भ हुई। जिसका प्रभाव विश्व के समस्त कलाकारों के मनोभावों पर पड़ा। इस समय विज्ञान के क्रान्तिकारी खोजों का कलाकारों ने अपने कलाकृतियों में प्रयोग आरम्भ करके मिश्रित माध्यमों का प्रयोग किया। सन् ''1960 ई0 में संस्थापन शब्द का प्रयोग आर्ट फोरम एवं इंटरनेशनल स्टूडियो ने उस विधा का वर्णन करने के लिए किया, जिसके अन्तर्गत प्रदर्शनी को उचित स्थान पर लगाया जाता

❑ विभागाध्यक्ष व्यावसायिक कला विभाग, महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट ज़िला सतना, (मध्य प्रदे ा) भारत
❑❑ शोधार्थी, महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, जिला सतना (मध्य प्रदेश), भारत

था। संस्थापन कला को अंग्रेजी में Installation कहते हैं। यह अंग्रेजी के प्देजंसस शब्द से लिया गया है।3'' जिसका अर्थ स्थापना करना होता है। यूरोपीय देशों में संस्थापन कला की शुरूआत बीसवीं शती के सातवें दशक में हो गयी थी। बीसवीं शती के अन्तिम दशक में विद्वानों, कला समीक्षकों ने प्रोजेक्ट आर्ट, वातावरणीय कला के नाम से होने वाले कला संस्थापन कला के नाम से परिभाषित किया। भारत में संस्थापन कला की शुरूआत सन् 1990 ई0 में चण्डीगढ़ में स्थित 'राकगार्डेन' के निर्माण के साथ शुरू हुई। जिसका निर्माण नेकचन्द्र ने कराया। इसके निर्माण में औद्योगिक एवं शहरी कचरे का इस्तेमाल किया गया है। समकालीन भारतीय कलाकारों में एम0एफ0 हुसैन ने सन् 1990 ई0 में हिंसा एवं इसके बाद की स्थितियों के वर्णन के लिए 'थियेटर ऑफ द एब्सर्ड' शीर्षक का संस्थापन कला श्री धराणी आर्ट गैलरी में प्रस्तुत की। इनकी फिल्म 'मीनाक्षी ए टेल आफ थ्री सिरीज' और 'गजगामिनी' में संस्थापन कला देखे जा सकते हैं। इसके पश्चात समकालीन कला में संस्थापन कला अपने पूर्ण वेग केसाथ प्रसिद्ध हुई और नये नये कलाकारों ने संस्थापन

कला के द्वारा अपने विचारों को प्रस्तुत करना शुरू कर दिया। ''कलाकार वेद नायर ने अपने संस्थापन ''मैनकाइन्ड 2011 एन अल्टरनेटिव' में धान का खेत उगाकर इसके केन्द्र में महोगनी का एक कुन्दा लटकाया और कुन्दे पर सीढ़ियाँ उकेरी तथा सीढ़ी के नीचे देवी की स्थापना की। धान के पौधे जब कुन्दे के बराबर हो गयी तब ऐसा प्रतीत हुआ मानो देवी आशीर्वाद देने धरती पर उतरी हो। हेमा उपाध्याय ने परमाणु विनाश पर संस्थापन 'रवीन्द्र भवन में प्रस्तुत किया था। जिसमें दो हजार से ज्यादा काक्रोच दीवाल, छत एवं फर्श पर रेंगते हुये भयावह आशंका को प्रस्तुत किया था।4'' विवान सुन्दरम ने संस्थापन 'द शेरगिल अर्चिव' में कलाकार के व्यक्तित्व को समझाने का प्रयास किया है। यह संस्थापन अमृता शेरगिल के जीवन पर आधारित था। अनीस कपूर का संस्थापन विशाल आकार लिये होती है। अपने संस्थापन 'क्लाउड गेट' जो कि घेरदार स्टेनलेस स्टील में बना है। यह संस्थापन अपने आस पास के वातावरण को जैसे अपने अन्दर ही समाहित कर लिया हो।

भारतीय समकालीन कला में युवा कलाकारों द्वारा संस्थापन कला को शिखर पर पहुँचाया है, अन्य भारतीय संस्थापन कलाकारों में जय श्री चक्रवर्ती, प्रोबीर गुप्ता, अपर्णा कौर, एन0एन0 रिमजान, नन्द कात्याल, शीला गौड़, मदन लाल, जय कृष्ण अग्रवाल, शिल्पा गुप्ता, शमिला सामंत, नलिनी मलानी, सुबोध केरकर, सुदर्शन सेट्टी, सुब्बा घोष, सुबोध गुप्ता, जैतिश कैल्लत, बैजू प्रधान, रियास कोमू आदि कलाकार प्रमुख हैं इन सभी कलाकारों की संस्थापन कृतियाँ दर्शकों के मनोभावों को झकझोरदेती है। कला समीक्षकों एवं लेखकों को समीक्षा करने एवं लेखन करने पर विवश कर देती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. साखलकर, र0वि0, 2013, आधुनिक चित्रकला का इतिहास, राजस्थान ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृष्ठ 41, 42।
2. श्रीवास्तव, रेखा, 2009–10, अभिव्यक्ति के बदलते साधन, शोध निधि, ललित कलाओं की त्रैमासिक शोध पत्रिका, अक्टूबर 2009 से जून 2010
3. http://kaganof.com/Lagablog/2008/12/07/20774
4. देवी, रीना, 2014, भारत में संस्थापन कला के विकास में महिला कलाकारों का योगदान : एक अध्ययन, पृष्ठ 86, 90।

*****